

G. J. College, Bihta, Patna

B.A. -I

By- Kumari Rajani Singh, Assistant Professor,
Department of Economics

कीन्स का रोजगार सिद्धांत (Keynesian Theory of Employment): -

कीन्स ने 1936 में प्रकाशित अपनी पुस्तक '**General Theory of Employment, Interest and Money**' में से के बाजार नियम पर घातक प्रहार किया और प्रतिष्ठित विचारधारा को अस्वीकृत करते हुए रोजगार का एक क्रमबद्ध तथा व्यवस्थित सिद्धांत प्रस्तुत किया।

कीन्स के अनुसार अर्थव्यवस्था में रोजगार का स्तर कुल उत्पादन की मात्रा पर निर्भर करता है। कुल उत्पादन मात्रा प्रभावपूर्ण मांग की मात्रा पर निर्भर करती है। अर्थात्, रोजगार की मात्रा प्रभावपूर्ण मांग पर निर्भर करती है। पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में प्रभावपूर्ण मांग अथवा समर्थ मांग (Effective Deman) में कमी से बेरोजगारी उत्पन्न होती है।

कीन्स की मान्यताएं :-

1. कीन्स का सिद्धांत अल्पकालीन विश्लेषण पर आधारित है।
2. कीन्स का सिद्धांत बंद अर्थव्यवस्था की मान्यता पर आधारित है।
3. पूर्ण प्रतियोगिता की मान्यता पर आधारित है।
4. उत्पादन में घटते प्रतिफल का नियम लागू होता है।
5. मुद्रा विनिमय माध्यम के साथ-साथ मूल्य संचय का आधार भी है।

6. अर्थव्यवस्था में अनैच्छिक बेरोजगारी की उपस्थिति भी पाई जाती है।

कीन्स के रोजगार का प्रारंभिक बिंदु समर्थ मांग का सिद्धांत है। अर्थव्यवस्था में वह मांग समर्थ मांग होती है जहां अर्थव्यवस्था में रोजगार स्तर(N), उत्पादन स्तर(O) तथा आय स्तर (Y) तीनों बराबर हों।

कीन्स के अनुसार समर्थ मांग के दो निर्धारक तत्व हैं।

(i) समग्र मांग फलन (ADF)

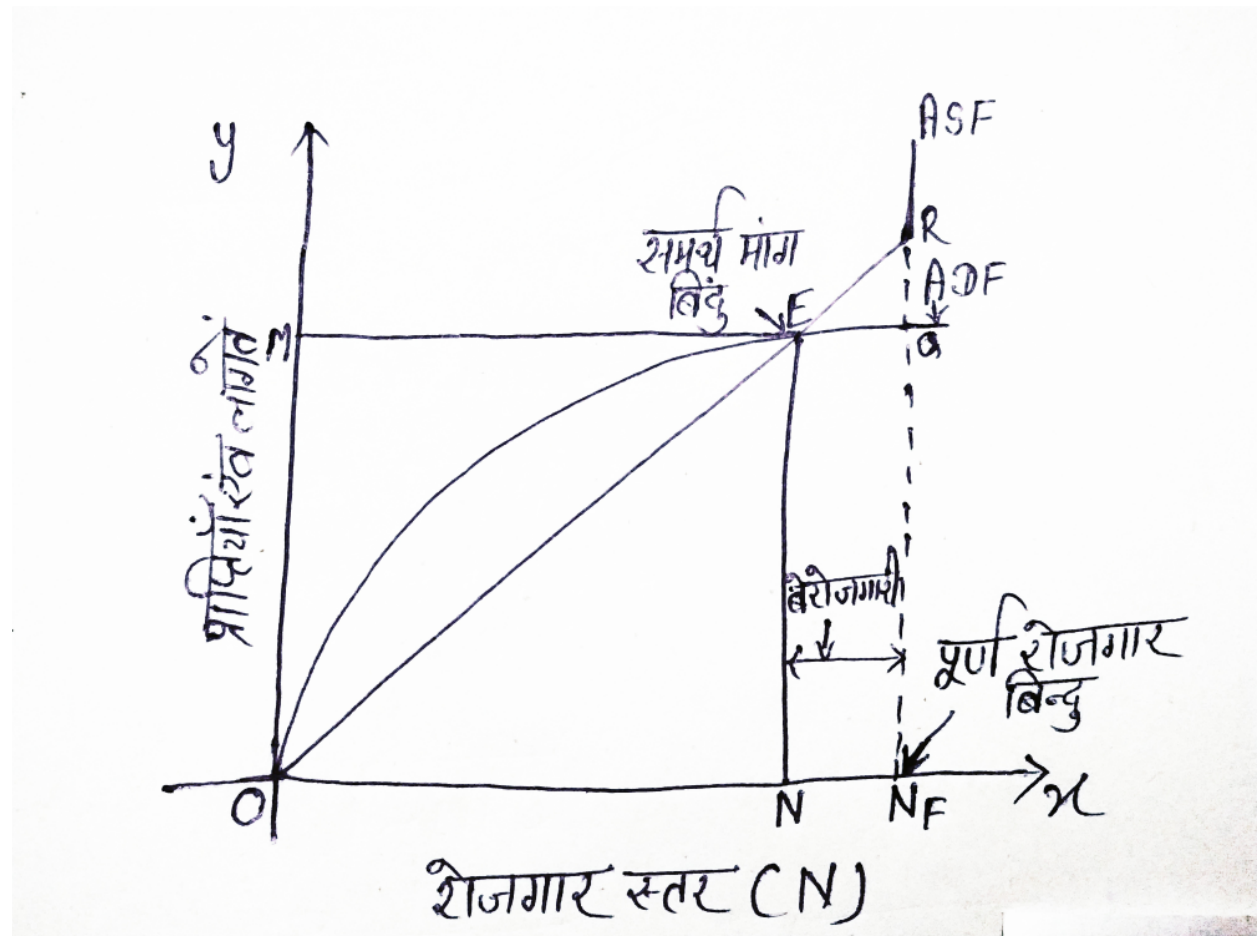
(ii) समग्र पूर्ति फलन (ASF)

प्रभावपूर्ण मांग का निर्धारण कुल मांग फलन तथा कुल पूर्ति फलन में साम्य के द्वारा निर्धारित होता है। जब एक उद्यमी को उत्पादित माल के विक्रय से जिस राशि के प्राप्त होने की आशा रहती है , उसे कुल मांग फलन कहते हैं एवं उद्यमी को अपने माल के विक्रय से कम से कम जितनी राशि मिलनी ही चाहिए उसे कुल पूर्ति फलन कहते हैं। अर्थात् कुल मांग फलन प्राप्ति को दर्शाता है तथा कुल पूर्ति फलन, लागत को दर्शाता है। जब कुल मांग फलन एवं कुल पूर्ति फलन में समानता होती है तो इसमें रोजगार का सामान्य स्तर बना रहता है। इसे अल्पकालीन संतुलन की स्थिति कहते हैं। इसे प्रभावपूर्ण मांग का बिंदु भी कहते हैं।

fig में,

OX-अक्ष पर रोजगार की मात्रा तथा OY-अक्ष पर लागत या प्राप्तियों को दर्शाया गया है। किसी अर्थव्यवस्था में ASF वक्र कुल पूर्ति फलन तथा ADF वक्र कुल मांग फलन को स्पष्ट करता है। ये दोनों वक्र एक दूसरे को E बिंदु पर काटते हैं, जो प्रभावपूर्ण मांग का बिंदु है। इस बिंदु पर रोजगार की मात्रा ON है तथा उद्यमी की लागत एवं प्राप्तियां दोनों ही OM हैं। इस प्रकार उद्यमी को E बिंदु पर अधिकतम लाभ की प्राप्ति होती है। ADF और ASF

वक्र E बिंदु के अतिरिक्त अन्य किसी बिंदु पर नहीं मिल सकते हैं। रेखा चित्र से यह भी स्पष्ट होता है कि ASF वक्र पहले धीरे-धीरे ऊंचा उठता है अर्थात् प्रारंभ में लागत में धीरे-धीरे वृद्धि होती है तथा बाद में लागत में तेजी से वृद्धि होती है, जो ASF वक्र के लंबवत आकार से देखी जा सकती है। ADF वक्र पहले तेजी से ऊपर उठता है, परंतु बाद में उसका आकार सम स्तरीय होने लगता है।



प्रोफेसर कीन्स ने अपने विश्लेषण में अपूर्ण रोजगार संतुलन बिंदु पर बल दिया है। जैसा कि हम जानते हैं कि E बिंदु पर जहां ADF तथा ASF एक-दूसरे को काटते हैं, रोजगार का संतुलन स्थापित होता है। परंतु यह

आवश्यक नहीं है की इस बिंदु पर पूर्ण रोजगार का स्तर विद्यमान हो। कीन्स के अनुसार यह संभव है कि पूर्ण रोजगार से कम स्तर पर यह संतुलन स्थापित हो जाए जिसे अपूर्ण रोजगार संतुलन कहते हैं।

कीन्स का रोजगार सिद्धांत अल्पकालीन परिस्थितियों पर आधारित है, अतः इसमें कुल मांग क्रिया को ही कोई विशेष महत्व दिया गया है क्योंकि अल्पकाल में लागत प्रायः स्थिर रहती है।

प्रभावपूर्ण मांग = कुल उत्पादन = कुल राष्ट्रीय आय

(Effective Demand) = (Total National Output) = (Total National Income) = (Total National Expenditure)

$$E.D. = Y = C + I + G$$

जहां Y = राष्ट्रीय आय, C = कुल निजी उपभोग व्यय, I = कुल निजी निवेश व्यय, G = कुल सरकारी व्यय (उपभोग + निवेश)

अतः, C, I तथा G ही समर्थ मांग के निर्धारक चर हैं इनके परिवर्तनों से ही समर्थ मांग और रोजगार को बढ़ाया जा सकता है।

* कीन्स के अनुसार आर्थिक समानता बनाए रखने तथा रोजगार वृद्धि के लिए राजकोषीय एवं मौद्रिक नीतियों के माध्यम से सरकार को हस्तक्षेप करना चाहिए। उनके अनुसार आर्थिक प्रणाली स्वयं संचालित नहीं होती है।

* रोजगार बढ़ाने के लिए कीन्स ने लचीली मजदूरी नीति के बदले लचीली मुद्रा नीति का समर्थन किया है।

* कीन्स का सामान्य रोजगार सिद्धांत एक समष्टिभावी अथवा बृहद विश्लेषण है जबकि प्रतिष्ठित विचारधारा व्यष्टिभावी अथवा सूक्ष्म विश्लेषण पर आधारित है।

* कीन्सीय विश्लेषण में मुद्रा भ्रम पाया जाता है जबकि क्लासिकल अर्थशास्त्रीयों ने मुद्रा भ्रम (Money illusion)को नकार दिया है।

कीन्स का उपभोग फलन : -

क्लासिकल अर्थशास्त्रियों ने स्वतंत्र रूप से किसी उपभोग फलन का प्रतिपादन नहीं किया था। यद्यपि उनके विचारों में यह निहित है कि उपभोग का निर्धारण ब्याज दर द्वारा होता है। कीन्स ने व्यय योग्य आय को उपभोग का निर्धारक माना और उपभोग फलन निम्नवत प्रस्तुत किया।

$$C = f(y)$$

जहां,

C = उपभोग

Y = आय

f = फलन है।

आय में वृद्धि होने पर उपभोग में वृद्धि होती है जो आय वृद्धि से अनुपातिक रूप में कम होती है कीन्स इसे **उपभोग का आधारभूत मनोवैज्ञानिक नियम** कहते हैं किन्स के उपभोग फलन की महत्वपूर्ण विशेषताएं निम्नलिखित हैं।

1. उपभोग वर्तमान आय का निरपेक्ष फलन है।
2. आय और उपभोग के मध्य संबंध मूलतः अल्पकालिक होता है।
3. अल्पकालिक उपभोग फलन हीं परिवर्तित होकर दीर्घकालिक उपभोग फलन हो जाता है।

4. दीर्घकाल में आय और उपभोग का संबंध अ-अनुपातिक होता है तथा आय वृद्धि के साथ औसत उपभोग प्रवृत्ति घटती जाती है।

$$\text{औसत उपभोग प्रवृत्ति (APC)} = C/Y$$

यह उपभोग और आय के अनुपात को व्यक्त करता है।

$$\text{औसत बचत प्रवृत्ति (APS)} = S/Y$$

यह बचत और आय के अनुपात को व्यक्त करती है।

$$Y = C + S$$

$$Y/Y = C/Y + S/Y$$

$$1 = APC + APS$$

सीमांत उपभोग प्रवृत्ति :-

यह उपभोग परिवर्तन और आय परिवर्तन के अनुपात को व्यक्त करती है। इसे आय परिवर्तन के सापेक्ष उपभोग परिवर्तन की दर भी कहते हैं।

$$\text{सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (MPC)} = \Delta C / \Delta Y$$

$$\text{सीमांत बचत प्रवृत्ति (MPS)} = \Delta S / \Delta Y$$

यह आय परिवर्तन के सापेक्ष बचत परिवर्तन की दर व्यक्त करती है।

आय परिवर्तन(ΔY), उपभोग परिवर्तन(ΔC) तथा बचत परिवर्तन(ΔS) का योग होता है।

$$\Delta Y = \Delta C + \Delta S$$

समीकरण के दोनों पक्षों को ΔY से विभाजित करने पर

$$\Delta Y/\Delta Y = \Delta C/\Delta Y + \Delta S/\Delta Y$$

$$1 = \Delta C/\Delta Y + \Delta S/\Delta Y$$

$$1 = \text{MPC} + \text{MPS}$$

उपभोग फलन की ढाल MPC होती है तथा बचत फलन की ढाल MPS होती है।